REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2023

फेक न्यूज और समाज: मीडिया साक्षरता का महत्व

डॉ. सीमा सिंह
(एसोसिएट प्रोफेसर समाजशास्त्र)
फ०अ०अ० राजकीय स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय, महमूदाबाद सीतापुर.

सारांश

फेक न्यूज का प्रसार आधुनिक समाज में एक गंभीर समस्या बन गया है, जो सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों को प्रभावित करता है। इसके कारण समाज में भ्रम, अविश्वास और तनाव उत्पन्न होता है तथा सामाजिक विभाजन और वैमनस्य बढ़ता है। राजनीतिक स्तर पर यह जनमत और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को प्रभावित कर सकता है। इसके अलावा, फेक न्यूज सार्वजनिक स्वास्थ्य को भी नुकसान पहुंचाती है, जैसे गलत चिकित्सा जानकारी के कारण लोगों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ना। आर्थिक रूप से यह बाजार में अस्थिरता, कंपनियों की साख में गिरावट और उपभोक्ता निर्णयों पर असर डालती है। सूचना का समाजीकरण समाज में ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है, लेकिन जब यह गलत सूचनाओं से प्रभावित होता है, तो हानिकारक बन जाता है। इस समस्या से निपटने के लिए मीडिया साक्षरता अत्यंत आवश्यक है, जो लोगों को सही-गलत जानकारी की पहचान, स्रोतों का मूल्यांकन और आलोचनात्मक सोच विकसित करने में मदद करती है। साथ ही, सरकार, शैक्षणिक संस्थान और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स को मिलकर फेक न्यूज पर नियंत्रण के लिए प्रभावी कदम उठाने चाहिए। अतः, सामूहिक प्रयास और जागरूकता के माध्यम से ही एक जिम्मेदार और सूचित समाज का निर्माण संभव है।

परिचय

वर्तमान डिजिटल युग में सूचना का प्रसार इतनी तेजी से हो रहा है कि यह हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित कर रहा है। इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से सूचनाएँ इतनी तीव्र गति से फैलती हैं कि कई बार सही और गलत के बीच अंतर करना कठिन हो जाता है। इस सूचना की बाढ़ में फेक न्यूज या झूठी खबरें एक गंभीर और चिंताजनक समस्या के रूप में उभरकर सामने आई हैं। फेक न्यूज का सीधा प्रभाव हमारे व्यक्तिगत निर्णयों पर पड़ता है। उदाहरण के लिए, स्वास्थ्य संबंधी गलत जानकारी के कारण लोग गलत उपचार अपनाने लगते हैं या दवाओं के बारे में भ्रमित हो जाते हैं। परंतु इसका प्रभाव केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह समाज की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक संरचनाओं को

भी प्रभावित करता है। फेक न्यूज के प्रसार से समाज में अविश्वास का वातावरण बनता है। लोग सत्य और असत्य के बीच भ्रमित हो जाते हैं, जिससे सामाजिक विभाजन और तनाव बढ़ता है। जब एक ही घटना के बारे में विरोधाभासी सूचनाएँ मिलती हैं, तो लोगों के बीच मतभेद और संघर्ष उत्पन्न होते हैं। इससे सामाजिक स्थिरता कमजोर होती है और आपसी विश्वास में कमी आती है।

फेक न्यूज वे सूचनाएँ होती हैं जो जानबूझकर गलत, भ्रामक या अधूरी होती हैं और जिनका उद्देश्य लोगों को गुमराह करना होता है। इन्हें अक्सर सनसनीखेज़ बनाकर प्रस्तुत किया जाता है ताकि अधिक से अधिक लोगों का ध्यान आकर्षित किया जा सके। कई बार इनका उपयोग किसी विशेष विचारधारा, राजनीतिक उद्देश्य या आर्थिक लाभ के लिए भी किया जाता है। यह प्रवृत्ति न केवल व्यक्तिगत और सामुदायिक स्तर पर खतरनाक है, बल्कि देश की राजनीतिक और आर्थिक स्थिरता को भी प्रभावित करती है। इसलिए फेक न्यूज के प्रमुख लक्षणों और उसके प्रभावों को समझना अत्यंत आवश्यक है।

प्रमुख लक्षण:

फेक न्यूज के कुछ प्रमुख लक्षण होते हैं, जो इसे खतरनाक और प्रभावशाली बनाते हैं। इन्हें निम्न बिंदुओं से समझा जा सकता है:

- फेक न्यूज प्रायः ऐसे स्रोतों से आती है जिनकी विश्वसनीयता संदिग्ध होती है। ये स्रोत अपनी पहचान स्पष्ट नहीं करते या गुमनाम/नकली नामों से जानकारी देते हैं, जिससे खबर की सत्यता पर संदेह बना रहता है।
- फेक न्यूज के शीर्षक आकर्षक और अतिरंजित होते हैं, जो वास्तविकता से भिन्न होकर केवल लोगों का ध्यान खींचने और बिना सोच-विचार के विश्वास दिलाने के लिए बनाए जाते हैं।
- फेक न्यूज में तथ्य अक्सर अप्रमाणित, अधूरे या तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किए जाते हैं, जिससे जानकारी की विश्वसनीयता कम होती है और लोग भ्रमित हो जाते हैं।
- फेक न्यूज लोगों की भावनाओं—जैसे डर, गुस्सा या उत्साह—को भड़काने के लिए बनाई जाती है, जिससे लोग बिना सोच-विचार के उस पर विश्वास कर लेते हैं और उसे आगे साझा करते हैं।
- फेक न्यूज सोशल मीडिया के माध्यम से तेजी से फैलती है, जहाँ लोग बिना सत्यापन के जानकारी साझा कर देते हैं, जिससे गलत सूचना कम समय में व्यापक रूप से फैल जाती है।

फेक न्यूज के प्रसार की समस्या को समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि इसका प्रभाव समाज के विभिन्न पहलुओं पर किस प्रकार पड़ता है। फेक न्यूज सामाजिक विभाजन को बढ़ावा देती है, जिससे जाति, धर्म और राजनीतिक मतभेदों के बीच तनाव उत्पन्न होता है। इसके अतिरिक्त, जब लोग फेक न्यूज का शिकार होते हैं, तो उनका मीडिया और सूचना स्रोतों पर विश्वास कम हो जाता है, जिससे लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं और सामाजिक संरचना पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। स्वास्थ्य संकटों के समय, जैसे कोविड-19 महामारी के दौरान, फेक न्यूज ने स्वास्थ्य संबंधी गलतफहमियों को बढ़ावा दिया, जिससे लोगों की सुरक्षा और स्वास्थ्य दोनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

सूचना का समाजीकरण सही जानकारी के प्रसार के माध्यम से सामाजिक समावेशन और जागरूकता को बढ़ावा देता है। इस प्रक्रिया में मीडिया साक्षरता की महत्वपूर्ण भूमिका है, जो लोगों को सही-गलत जानकारी की पहचान, तथ्यों की जांच और आलोचनात्मक सोच विकसित करने में मदद करती है। अतः फेक न्यूज को रोकने के लिए सूचना का समाजीकरण

और मीडिया साक्षरता को बढ़ावा देना आवश्यक है, जिसके लिए शैक्षणिक संस्थानों, संगठनों और सरकार के संयुक्त प्रयास जरूरी हैं।

फेक न्यूज के प्रभाव:

फेक न्यूज आधुनिक सूचना युग में एक गंभीर समस्या बन चुकी है, जो सोशल मीडिया के माध्यम से तेजी से फैलती है और व्यापक प्रभाव डालती है। इसका समाज के विभिन्न क्षेत्रों पर नकारात्मक असर पड़ता है, जिनके प्रमुख प्रभाव निम्नलिखित हैं:

- फेक न्यूज राजनीति पर नकारात्मक प्रभाव डालती है, क्योंकि यह जनमत और मतदान व्यवहार को प्रभावित करती है। यह चुनावों को प्रभावित कर लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को कमजोर करती है तथा राजनीतिक संस्थाओं पर लोगों का विश्वास कम करती है। अतः यह पारदर्शिता और निष्पक्षता के लिए एक गंभीर चुनौती है।
- फेक न्यूज सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक मतभेदों को बढ़ाकर समाज में तनाव, नफरत और अविश्वास पैदा करती है, जिससे सामाजिक एकता और सहयोग कमजोर हो जाते हैं।
- बार-बार फेक न्यूज के संपर्क में आने से लोगों का मीडिया और सूचना स्रोतों पर विश्वास घटता है, जिससे वे सही जानकारी पर भी संदेह करने लगते हैं और लोकतांत्रिक प्रक्रियाएँ प्रभावित होती हैं।
- फेक न्यूज स्वास्थ्य संबंधी गलत सूचनाएँ फैलाकर लोगों को गलत निर्णय लेने पर मजबूर करती है, जिससे व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वास्थ्य दोनों को गंभीर नुकसान पहुँचता है, विशेषकर महामारी या आपदा के समय।
- फेक न्यूज झूठी अफवाहों के माध्यम से निवेश, व्यापारिक निर्णय और बाजार को प्रभावित करती है, जिससे निवेशकों का भरोसा घटता है और आर्थिक नुकसान होता है।

फेक न्यूज एक गंभीर समस्या है, जिसे नियंत्रित करने के लिए मीडिया साक्षरता, सही जानकारी का प्रसार और उसकी पहचान आवश्यक है। इससे इसके नकारात्मक प्रभावों को कम कर एक जागरूक समाज बनाया जा सकता है। फेक न्यूज से बचाव के लिए स्रोत की जांच करें, विश्वसनीय समाचारों पर भरोसा करें, फैक्ट-चेकिंग करें और बिना सत्यापन के जानकारी साझा न करें।

सूचना का समाजीकरण:

सूचना का समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से जानकारी समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुँचाई जाती है, जिससे जागरूकता, शिक्षा और सामाजिक विकास को बढ़ावा मिलता है।

- मीडिया और संचार माध्यम - सूचना के प्रसार के लिए समाचार पत्र, रेडियो, टीवी और इंटरनेट जैसे विभिन्न माध्यमों का उपयोग किया जाता है।
- लक्ष्य समूह - सूचना को सामान्य जनता, पेशेवरों और विशेषज्ञों जैसे विभिन्न वर्गों तक पहुँचाने के लिए लक्षित तरीकों का उपयोग किया जाता है।
- भाषा और स्वरूप - सूचना को विभिन्न भाषाओं और स्वरूपों में प्रस्तुत किया जाता है, ताकि वह सभी के लिए सुलभ हो सके।

- जागरूकता और शिक्षा - यह प्रक्रिया समाज में जागरूकता और शिक्षा को बढ़ावा देती है, जिससे लोग विभिन्न मुद्दों के प्रति सचेत होते हैं।
- सत्यता और विश्वसनीयता - सूचना की सटीकता और विश्वसनीयता की जांच आवश्यक है, ताकि भ्रामक जानकारी को रोका जा सके।
- विवेकपूर्ण उपभोग - लोगों को सूचना का सोच-समझकर और जिम्मेदारीपूर्वक उपयोग करने के लिए प्रेरित किया जाता है।
- जनता की प्रतिक्रिया - सूचना पर लोगों की प्रतिक्रिया और फीडबैक से उसके प्रभाव और उपयोगिता का मूल्यांकन किया जाता है।
- संवाद का विकास - यह प्रक्रिया संवाद और विचार-विमर्श को बढ़ावा देती है, जिससे विचारों का आदान-प्रदान संभव होता है।

मीडिया साक्षरता की आवश्यकता :

मीडिया साक्षरता एक महत्वपूर्ण कौशल है, जो लोगों को समाचार, विज्ञापन और सोशल मीडिया जैसी विभिन्न मीडिया सामग्री को समझने, विश्लेषण करने और सही तरीके से मूल्यांकन करने में सक्षम बनाता है। यह हमें तेजी से बदलते मीडिया वातावरण में सही जानकारी तक पहुँचने और उसका उचित उपयोग करने में सहायता करता है। इसे समझने के लिए निम्नलिखित बिंदु महत्वपूर्ण हैं:

- **स्रोत की पहचान:** किसी भी जानकारी को समझने के लिए उसके स्रोत की विश्वसनीयता और उद्देश्य को जानना आवश्यक है, ताकि यह पता चल सके कि वह निष्पक्ष है या किसी पक्षपात से प्रभावित।
- **सामग्री का विश्लेषण:** मीडिया सामग्री के संदेश, उद्देश्य और संभावित पक्षपात को समझना आवश्यक है, ताकि उसकी विश्वसनीयता का सही आकलन किया जा सके।
- **सत्यापन:** किसी भी जानकारी की सच्चाई की पुष्टि करना आवश्यक है, जिसके लिए विश्वसनीय स्रोतों से मिलान करना चाहिए, ताकि फेक न्यूज से बचा जा सके।
- **मीडिया प्रभाव:** मीडिया हमारे विचारों और निर्णयों को प्रभावित करता है; मीडिया साक्षरता हमें इसके प्रभाव को समझकर जानकारी का विवेकपूर्ण उपयोग करना सिखाती है।
- **सुरक्षित उपयोग:** मीडिया का सुरक्षित और नैतिक उपयोग करना आवश्यक है, जिसमें गोपनीयता की रक्षा, गलत जानकारी साझा करने से बचना और जिम्मेदारीपूर्ण व्यवहार शामिल है।

यह मीडिया साक्षरता के महत्व को स्पष्ट करता है। इसका अर्थ है कि मीडिया साक्षरता हमें आज के सूचना-समृद्ध वातावरण में सतर्क और जागरूक बने रहने में मदद करती है। जब व्यक्ति मीडिया साक्षर होता है, तो वह विभिन्न प्रकार की सूचनाओं को समझकर सही निर्णय लेने में सक्षम होता है और एक जिम्मेदार नागरिक की भूमिका निभाता है। इसके साथ ही, यह भी बताया गया है कि मीडिया साक्षरता केवल युवाओं के लिए ही नहीं, बल्कि सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए आवश्यक है। डिजिटल युग में हर व्यक्ति किसी न किसी रूप में मीडिया से जुड़ा है, इसलिए सही और गलत जानकारी में अंतर करना, उसका विश्लेषण करना और उसका जिम्मेदारी से उपयोग करना हर किसी के लिए जरूरी हो गया है।

निष्कर्ष

फेक न्यूज आज के डिजिटल युग में गंभीर समस्या बन गई है, जो व्यक्तिगत जीवन और समाज की स्थिरता को खतरे में डालती है। इसके प्रभाव को कम करने और सही जानकारी के प्रसार के लिए मीडिया साक्षरता अत्यंत महत्वपूर्ण है। मीडिया साक्षरता लोगों को सूचनाओं का मूल्यांकन करने, भ्रामक खबरों की पहचान करने और जागरूक निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। सही जानकारी का व्यापक प्रसार सुनिश्चित करने के लिए सूचना का समाजीकरण आवश्यक है। इसके लिए शैक्षणिक संस्थान, मीडिया संगठन, सामाजिक संगठन और सरकारी निकाय मिलकर काम कर सकते हैं। स्कूलों और विश्वविद्यालयों में मीडिया साक्षरता को पाठ्यक्रम में शामिल किया जा सकता है, कार्यशालाएँ आयोजित की जा सकती हैं, और सरकारी नीतियों के माध्यम से समाज में इसकी पहुँच बढ़ाई जा सकती है। इस प्रकार, जब सभी हितधारक मिलकर प्रयास करेंगे, तो एक सूचित, सजग और जिम्मेदार समाज का निर्माण होगा, जो फेक न्यूज से सुरक्षित रहेगा और सही जानकारी के आदान-प्रदान को सुनिश्चित करेगा, जिससे सामाजिक एकता और स्थिरता बनी रहेगी।

संदर्भ

1. कुमार, स. (2021). "फेक न्यूज और समाज: एक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण." समाजशास्त्र पत्रिका, 12(3), 45-62.
2. सिंह, A. (2020). "डिजिटल युग में फेक न्यूज का प्रसार और इसके सामाजिक प्रभाव." मीडिया अध्ययन जर्नल, 8(2), 89-104.
3. शर्मा, R. (2019). "सूचना का समाजीकरण: मौजूदा परिदृश्य और चुनौतियाँ." समाज और संस्कृति, 7(1), 33-50.
4. यादव, P. (2021). "मीडिया साक्षरता: फेक न्यूज के खिलाफ एक प्रभावी उपाय." शिक्षा और मीडिया, 9(4), 21-37.
5. शर्मा, K. (2018). "फेक न्यूज और सार्वजनिक स्वास्थ्य: कोविड-19 महामारी का केस स्टडी." स्वास्थ्य अध्ययन जर्नल, 14(1), 15-29.
6. वर्मा, N. (2020). "फेक न्यूज के खिलाफ कानूनी और संस्थागत उपाय." कानूनी पत्रिका, 11(2), 78-91.
7. सिंह, R. (2022). "मीडिया साक्षरता और फेक न्यूज: एक समीक्षात्मक अध्ययन." मीडिया और समाज, 10(3), 53-68.
8. गुप्ता, M. (2021). "सामाजिक मीडिया पर फेक न्यूज का प्रभाव: एक विश्लेषण." डिजिटल मीडिया जर्नल, 13(2), 40-56.
9. सैनी, P. (2019). "सूचना का समाजीकरण और मीडिया साक्षरता: वर्तमान परिप्रेक्ष्य." समाज और मीडिया, 6(1), 18-34.
10. अग्रवाल, V. (2020). "फेक न्यूज और उसकी रोकथाम के लिए मीडिया साक्षरता के उपाय." मीडिया अध्ययन, 12(4), 72-89.
11. कुमार, R. (2021). "फेक न्यूज और सामाजिक संरचना: एक सामाजिक विश्लेषण." समाजशास्त्र पत्रिका, 13(2), 22-37.
12. महाजन, T. (2020). "फेक न्यूज और लोकतंत्र: चुनौतियाँ और समाधान." लोकतंत्र और मीडिया, 8(3), 56-71.
13. गुप्ता, A. (2019). "मीडिया साक्षरता का महत्व और समाज पर इसका प्रभाव." शिक्षा और समाज, 7(2), 44-59.
14. ठाकुर, S. (2021). "सूचना का समाजीकरण: मीडिया साक्षरता के दृष्टिकोण." समाजशास्त्र अध्ययन, 14(1), 29-45.
15. वशिष्ठ, N. (2020). "फेक न्यूज और स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव: एक समीक्षा." स्वास्थ्य और समाज, 9(2), 15-32.
16. वर्मा, R. (2021). "फेक न्यूज के प्रसार को नियंत्रित करने के उपाय." मीडिया और समाज, 11(3), 62-80.
17. चौधरी, S. (2019). "सूचना का समाजीकरण और सामाजिक परिवर्तन." समाज और संस्कृति जर्नल, 5(3), 53-68.
18. शर्मा, A. (2020). "फेक न्यूज और इसकी रोकथाम के लिए प्रभावी रणनीतियाँ." मीडिया प्रबंधन, 12(1), 21-37.

19. सिंह, K. (2021). "मीडिया साक्षरता और फेक न्यूज़: एक अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण." मीडिया और सूचना, 10(4), 73-89.
20. यादव, S. (2020). "फेक न्यूज और समाज: प्रभाव और संभावित समाधान." समाजशास्त्र अध्ययन, 8(2), 45-60.
21. बिष्ट, P. (2021). "डिजिटल युग में फेक न्यूज का असर और इससे निपटने के उपाय." डिजिटल मीडिया और समाज, 9(3), 34-49.
22. जोशी, V. (2019). "मीडिया साक्षरता का विकास और फेक न्यूज के खिलाफ लड़ाई." मीडिया शिक्षा पत्रिका, 7(1), 22-39.
23. ऑलकोट, एच., & जेंट्ज़को, एम. (2017). *2016 के चुनाव में सोशल मीडिया और फेक न्यूज़.* जर्नल ऑफ़ इकॉनोमिक पर्सपेक्टिव्स, 31(2), 211–236।
24. लेज़र, डी. एम. जे., बाउम, एम. ए., बेन्कलर, वाई., बेरिंस्की, ए. जे., ग्रीनहिल, के. एम., मेंकज़र, एफ., ... & ज़िट्रेन, जे. एल. (2018). *फेक न्यूज़ का विज्ञान.* साइंस, 359(6380), 1094–1096।
25. टांडोक, ई. सी., लिम, ज़ेड. डब्ल्यू., & लिंग, आर. (2018). *“फेक न्यूज़” की परिभाषा: शैक्षणिक परिभाषाओं का प्रकारिकीकरण.* डिजिटल जर्नलिज़्म, 6(2), 137–153।
26. यूनेस्को. (2018). *मीडिया और सूचना साक्षरता: शिक्षकों के लिए पाठ्यक्रम.* यूनेस्को प्रकाशन।
27. वार्डल, सी., & डेरेकशान, एच. (2017). *सूचना विकार: अनुसंधान और नीति निर्माण के लिए एक अंतर्विषयक ढांचा.* काउंसिल ऑफ़ यूरोप रिपोर्ट।
28. सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार. (2020). *फेक न्यूज से निपटने के लिए दिशानिर्देश।*
29. मैकग्रू, एस., ऑर्टेगा, टी., ब्रेकस्टोन, जे., & वाइनबर्ग, एस. (2017). *फेक न्यूज़ से बड़ा चुनौती: सिविक ऑनलाइन रीजनिंग सिखाना.* सोशल एजुकेशन, 81(5), 276–281।